"सजण-ठग"

• उजलि कैहा चिलकणा घोटिम कालड़ी मस । धोतिआ जूठि न उतरै जे सउ धोवा तिस ।

अर्थ:- मैंने कांसे का साफ और चमकीला बर्तन घिसाया तब उसमें से थोड़ी - थोड़ी काली स्याही लग गई । अगर मैं सौ बार भी उस कांसे के बर्तन को धोऊँ साफ करूँ तो भी बाहर से धोने से उसके अंदर की जूठ कालिख़ दूर नहीं होती ।

सजण सेई नालि मै चलदिआ नालि चलन्हि । जिथै लेखा मंगीऐ तिथै खड़े दिसनि ।

अर्थः- मेरे असल मित्र वही हैं जो हमेशा मेरे साथ रहें, और यहाँ से चलने के वक्त भी मेरे साथ ही चलें, आगे जहाँ किए कर्मों का हिसाब माँगा जाता है वहाँ बेबाकी से बेझिझक हो के हिसाब दे सकें भाव, हिसाब देने में कामयाब हो सकें ।

कोठे मंडप माड़ीआ पासहु चितवीआहा । ढठीआ कमि न आवन्ही विचहु सखणीआहा ।

अर्थः- जो घर – मन्दिर - महल चारों तरफ़ से चित्रे हुए हों सजे धजे हों पर अंदर से ख़ाली हों, वे गिर जाते हैं और गिरे हुए किसी काम नहीं आते ।

बगा बगे कपड़े तीरथ मझि वसन्हि । घुटि घुटि जीआ खावणे बगे ना कहीअन्हि।

अर्थः- बगलों के पंख सफेद होते हैं, बसते भी वे तीर्थों पर ही हैं । पर जीवों को गले से घोट - घोट के खाने वाले अंदर से साफ - सुथरे नहीं कहे जाते ।

सिमल रुख सरीर मै मैजन देखि भुलन्हि । से फल कंमि न आवन्ही ते गुण मै तनि हंन्हि ।

अर्थः- जैसे सिंबल का वृक्ष है, वैसे मेरा ये शरीर है, सिंबल के फलों को देख के तोते भुलेखा खा जाते हैं, सिंबल के वे फल तोतों के काम नहीं आते वैसे ही गुण मेरे शरीर में हैं ।

अंधले भार उठाइआ डूगर वाट बहुत । अखी लोड़ी ना लहा हउ चड़ि लंघा कित ।

अर्थः- मुझ अंधे ने सिर पर विकारों का भार उठाया हुआ है, आगे मेरा जीवन राह बहुत ही पहाड़ी रास्ता है । आँखों से तलाश के मैं राह - ठिकाना नहीं तलाश सकता क्योंकि आँखें हैं ही नहीं । इस हालत में किस तरीके से पहाड़ी पर चढ़ कर मैं पार लांघूँ ? ।

चाकरीआ चगिआईआ अवर सिआणप कित । नानक नाम समालि तूं बधा छुटहि जित । (1-729)

अर्थः- हे नानक! पहाड़ी रास्ते जैसे बिखड़े जीवन - राह में पार लंघने के लिए दुनिया के लोगों की खुशामदें, लोक दिखावे और चालाकियाँ किसी काम नहीं आ सकतीं । परमात्मा का नाम अपने हृदय में संभाल के रख । माया के मोह में बँधा हुआ तू इस नाम स्मरण के द्वारा ही मोह के बंधनो से खलासी पा सकेगा ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"